ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v7.i11.2019.897

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

मांडना में विभिन्न चौक परम्परा

डॉ. कुमकुम भारद्वाज [1]
[1] प्राध्यापक, चित्रकला, महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय किला भवन, इंदौर

मुख्य शब्द – परम्परा, परम्परा, चौक

Cite This Article: डॉ. कुमकुम भारद ाज(2019). “मांडना में विभिन्न चौक परम परा *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 1-4. 10.29121/granthaalayah.v7.i11.2019.897.

मालव भूमि के हिन्दू परिवारों में मांडने बनाने की रीति है। घर, दालान एवं जमीन के खुले वातावरण में किसी पर्व अथवा खुशी के समय खड़िया तथा गेरू के द्वारा बनाई जाने वाली सभी आकृतियों को मांडना कहते है। वैसे मांडने का अर्थ अंकित करना होता है।[1]

भारत में धार्मिक त्यौहारों की बाहुल्यता है। प्रत्येक त्यौहार पर ग्रांम एवं नगरीय अंचलों में मकानों को साफ-सुथरा करके मांडने बनाने की परम्परा है। ग्रामीण अंचल में तथा शहरों के कच्चे मकानों को लीपण से लीप-पोतकर गृह लक्ष्मी अथवा कन्याओं द्वारा मकान की जमीन पर मांडने (मानव आकृति रहित) बनायी जाती है। ये मांडने गोलाकार या कोणों में बनाये जाते है। प्रायः देखा गया है कि मांडना कोणों के आकार पर बनाये जाते हैं जिसे छोटी उम्र व बढ़ी उम्र की कन्या और महिला भी आसानी से बना सकती है। प्रवीण बड़ी-बूढ़ी महिलाएं पहले प्राथमिक आकार को गेरू की रेखाओं से आंकती है। तत्पश्च्यात सफेद खड़िया मिट्टी से रेखांकन किया जाता है। प्राथमिक रेखाकृति को चारों ओर से, रेखा व अन्य आकारों से भर दिया जाता है। इस कार्य में छोटी-बड़ी सभी महिलाएं मदद देती है। इस प्रकार कला-शिक्षण का कार्य भी सरलता से सम्पन्न हो जाता है।

इन मांडनों में आलेखन के अलावा दोपढ़मांत, बेलपात, फूलपांत तथा प्रतीकों के आकार बनाये जाते है।2 दीपावली पर्व पर फूलचौक (आठ पंखुड़ी का फूल) बारह का बाजार (चौक), सारचे की जोढ़ आदि अनेक आकृतियां बनाई जाती है।

खड़ी (खड़िया) तथा गेरू को पानी एवं गोंद के घोल से कपड़े की चिन्दी अथवा बालों की गुच्छी व रूई के फौहे को अंगुलियों में रखकर अंगुठे से दबाकर फर्श पर मुखय आकार की रेखाएं बनाते हे। प्रथम गेरू के पश्चात् खड़िया से मांडने को भरते हैं। मांडने में प्रयुक्त समानान्तर और वक्र रेखाओं ने आधुनिक चित्रकला में ज्यामितिक आलेखन शैली को आगे बढ़ने में सहयोग दिया है।

इन्हीं माण्डनों में चौक माण्डना अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। चौक किसी एक ही प्रकार की बनाई आकृति से ही भरा जाता है ऐसा नहीं किन्तु इसे बनाने में पर्व अपनी प्रधानता रखता है, उसी के अनुसार परम्परागत आकारों का आकार बनाकर महिलाऐं इसे बनाती है।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3584910

माण्डण निम्न विषयों के आधार पर बनाये जाते हैं-

सातिये का चौक, दीवा की जोड़, केरी का चौक, होली का कपड़ा को चौक, चार सातियों का चौक, नारियल का चौक, संक्रातिका कुण्डा, पगल्यो, पांच बावड़ी, बीजणी का पगलिया, चौक आदि।

चौक- चौक आंगश के मध्य भाग में बनाया जाता है। माण्डना बनाने से पूर्व विधिवत लीप लिया जाता है। फर्श के मध्य भाग में बनाये गये माण्डने में विभिन्न रंगों का उपयोग करके सजाते हैं।

सातिये का चौक- सातिये की आकृति का अंकन धार्मिक, मांगलिक कार्यों हेतु किया जाता है किन्तु आंगनों में, मांडने के रूप में, खड़ी एवं गेरू रंग से भी बनाया जाता है। प्रायः कच्चे मकानों के आंगन, चौक को गोबर से आंगल लीपकर उपरोक्त रंगों से बिना स्केल, पेंसिल, कलम के उपयोग से स्वस्तिक आकृति सरलता से बना दी जाती है। आकृतियों में रेखा गणित का समावेश रहता है किन्तु बनाते समय इन्हें इतना अभ्यास हो जाता है कि कम्पॉस-स्केल की कोई आवश्यकता नहीं रहती है। एक स्थान से मांडना प्रारम्भ होता है और सम्पूर्ण आंगन भर जाता है।

कच्चे मकानों की फर्श पर मांडने मांडे जाते हैं किन्तु इन मांडनों का आधुनिकीकरण भी हो गया है। पक्के मकानों की पक्की फर्श पर, पक्के तेल रंगों से बुशों की सहायता से, आधुनिक यंत्रों का उपयोग करके भी इन्हें बनाते हैं।

सातियो का चौक – जिसके मध्य में सातिया स्वस्तिक का आकार बनाया जाता है। स्वस्ति को सुन्दर बनाने के लिए चार बड़े एवं चार छोटे उससे जुड़े हुए कलश बनाए हैं तथा प्रत्येक कलश को अष्टवक्रमुज रेखा एक दूसरे से जोड़ती है। आठों कलश के जोड़ पर छोटे-छोटे आठ चतुर्भुजनुमा आकार आदि को गेरू रंग की रेखा से बना कर अंदर के सम्पूर्ण भाग में परत भरी जाती है। परत सफेद रंग (खड़ी) से भर दी जाती है। गेरू और खड़ी के रंगों के उपयोग ने माण्डने को उभार दिया है। इस प्रकार के माण्डने ग्राम से लेकर शहर में रहने वाली महिलाएं बड़ी ही तल्लीनता और रूचि के साथ बनाकर अपने आंगन को सजाती हैं।

आंगन को सजाना शुभ भावनाओं का प्रतीक है। गृह-लक्ष्मी ईश्वर से अपने परिवार के शुभ व मंगल की कामना करती है, प्रार्थना करती हैं वह इसे प्रत्येक शुभ अवसर पर बनाती है।

सातिये का चौक उज्जैन के माण्डने का प्रमाण है उपरोक्त विवरणों के आधार पर इसका भी निर्माण हुआ है किन्तु इसकी बनावट में अंतर है। उज्जैन मांण्डना चौक में स्वस्तिक को दो रेखाओं के जोड़ से बनाया जाता है। ये रेखाएं गेरू रंग की तथा इसे खड़ी रंग की सफेद रेखाओं से उभार दिया जाता है। सातिये की चारों आड़ी रेखाओं पर अलग-अलग कलश बनाये जाते हैं, कलश के ऊपरी एवं भीतरी भाग को गेरू एवं खड़ी के रंगों से उभार कर सुन्दर बना दिया जाता है।

स्वस्तिक की खड़ी रेखाओं की बगल में चारों ओर सफेद बिन्दी को गोलाकार रेखा एवं घुमावदार सफेद रेखा से उभार दिया जाता है। इस प्रकार सातिये की जोड़ छोटे-छोटे आकार में भी बनाई जाती है।

उपरोक्त माण्डनों में लोक कला का पुट है जिसकी अपनी कोई पौथी नहीं होती किन्तु परम्परागत ज्ञान होता है।

चौक पांव बावड़ी - यह चौक हमेशा पर्व पर प्रायः बनाया जाता है। इसे दीपावली पर्व पर भी बनाया जाता है। पाँच बावड़ी का अर्थ वह बावड़ी जिसमें पगालिये होते हैं। पंगतियां (पीढ़ी) से उतर कर पानी भरा जाता है या इसे तालाब भी कहा जाता है। माण्डने के मध्य एक एवं आस पास चार बावड़ह बनाते हैं। इन बावडी को चार किनार

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3584910

से जोड़ दिया जाता है तथा प्रत्येक किनार को कलश बनाकर जोड़ दिया जाता है। चारों बावड़ी के उपरी भाग पर छोटे कलश आड़े बनाकर दिये जाते हैं। इस प्रकार चार बड़े आरे चार छोटे कलश आपस में एक दूसरे से जुड़ जाने पर आकर्षक माण्डना बन जाता है। यह माण्डना यहीं तक सीमित नहीं रहता है इसे शकरपारे सीथी एवं वक्र रेखाएं आदि से इसके खाली भाग की भरत करते हैं। इससे यह बहुत ही सुन्दर बन जाता है। इस पांच बावड़ी चौक को सफेद लड़ी एवं गेरू रंग से बनाते हैं किन्तु आधुनिक रंग सज्जा से भी इसका निर्माण किया जाता है।

आठ पंखुड़ी का फूल चौक अथवा केरा का चौक - यह चौक दीपावली पर्व पर तथा अन्य किसी भी मांगलिक पर्व पर बनाया जाता है। आंगन के मध्य भाग से इसे बनाया जाता है। पूर्ण बन जाने पर आंगन का अधिकांश भाग इससे भर दिया जाता है।

माण्डने के मध्य में आठ पंखुड़ीदार फूल बड़े पैमाने पर बनाते हैं तथा प्रत्येक पंखुड़ियों के सिरे पर से वक्र रेखा पर केरी की आकृति बनाकर एक दूसरे से जोड़ दी जाती है। इन केरियों को दो वक्र रेखा जोड़ती है। वक्र रेखा पर केरी की आकृति एक दूसरे से जोड़ दी जाती है। वक्र रेखा से जुड़े हुए भाग पर, मुंदड़ी की तीन आकृति बनायी जाती है जिससे इस माण्डने का सम्पूर्ण भाग ज्यामितीय आकार ग्रहण कर लेता है। प्रत्येक पंखुड़ी के भीतरी भाग में भरत भर दी जाती है जिससे इसकी सुन्दरता निखर उठती है।

छः पंखुड़ी का फूल चौक अथवा केरा का चौक - यह साधारण चौक है किन्तु इसका ज्यामितिक आकार सम्पूर्ण चौक को बहुत ही सुन्दर बना देता है। यह आकार में छोटा और बड़े से बड़ा भी बनाया जाता है। इस चौक को सर्वप्रथम वृत्त बनाकर छः दोहरी रेखाओं का घेरा बना देते हैं। इन रेखाओं के मध्य भाग और वृत्त बिन्दु तक शकरपारे के समान छः आकार बनाकर एक दूसरे को आपस में जोड़ देते हैं इनके जोड़ने से छः पंखुड़ीनुमा फूल का आकार बन जाता है। इन प्रत्येक आकार के बीच में एक-एक शकरपारेनुमा आकार बना दिया जाता है जिससे पंखुड़ी का खालीपन दूर हो जाता है और इसकी सुन्दरता के निखार में सहयोग मिलता है।

आकार के उपरी बांये और नीचे के दांये भाग पर जहां डबल रेखाओं का मेल होता है तक दो सीधी रेखा जोड़ कर उन पर त्रिभुजकार में त्रिभुजाकार बना कर जोड़ दिया जाता है। शेष सभी डबल रेखा एवं पंखुड़ी के जोड़ पर स्वस्तिक बना दिये जाते हैं। इस प्रकार इस चौक में छः पंखुड़ियों, छः दुहरी रेखाएं, चार सातिये, दो त्रिभुज का सीधा सरल रेखा पर जोड़ एवं अर्द्ध वृत्त की कड़ी का सहारा लेकर यह पूर्ण आकृति बना दी जाती है।

बारह का बाजार - दीपावली पर्व पर बनाये जाने वाला यह चौक बारह का बाजार नाम से पुकारा जाता है। मालवा की भूमि पर इसका बनाया जाना इसकी लोकप्रियता और महत्व का प्रमाण है किन्तु थोड़े-थोड़े अन्तर पर इसकी बनावट में भिन्नता पायी जाती है। जिस प्रकार बारह कोस जाने पर बोली एक होने पर भी बदल जाती है उसी प्रकार माण्डने का मूल आकार तो वही होता है, स्थान के साथ-साथ किन्तु उसकी साज-सज्जा बदलती जाती है। उज्जैन नगर में भी इस माण्डने को बनाने का प्रचलन है, समानता में भिन्नता पाई जाती है फिर भी मूल भावनाएं विशेष स्थान में ही पाई जाती है।

यह माण्डना चौकोर खाने की (चर्तुभुज) चारों सरल रेखा के मध्य में बिन्दु लगाकर प्रत्येक भाग को जोड़कर बनाया जाता है। इससे अन्दर के भाग में बड़ा चौकोर आकार बन जाता है। इन्हीं चौकोर रेखाओं पर सीधे चारों चौकोर भाग के कोने को केन्द्र मानकर शकरपारे के समान आकृति (खड़े चौकोर की सरल रेखाओं के आसपास के कुछ भाग को छोड़कर) बना देते हैं। खड़े चौकोर के मध्य में सीधा डबल चौकोर बनाकर खड़ा डबल चौकोर बना दिया जाता है।

नारियल का चौक - नारियल का यह चौक किसी भी मांगलिक कार्य, उत्सव या त्यौहार पर बनाया जाता है।

इसके मध्यभाग में सीधा छोटा चौकोर दुहरी रेखाओं में बनाकर चारों कोनों पर चार बड़े नारियल-सा आकार बनाकर व चौकोर की सरल रेखा पर भी चारों ओर छोटा शकरपारा-सा नारियल आकार बनाकर आपस में जोड़ दिया जाता है। ये आकार में छोटे होते हैं। प्रत्येक छोटे एवं बड़े नारियल आकार के सिरे पर एक-दूसरे के विपरीत मूंदड़ी बनाकर दो आड़ी छोटी रेखाओं के मध्य में खड़ी सरलरेखा बना दी जाती है। खड़ी रेखा के सिरे पर छोटा शकरपारा व बिन्दुओं का आकार बना कर दिया जाता है।

इस माण्डने की यह विशेषता है कि इसमें रंगों का सन्तुलन रहता है। प्रायः यह देखा गया है कि माण्डने की प्रमुख रेखाएं गेरू से और भरत सफेद खड़ी से की जाती है किन्तु इस माण्डने में जितनी मात्रा में गेरू का प्रयोग होता है उतनी ही मात्रा में खड़िया का भी उपयोग होता है। इसमें भरत की भरमार नहीं होती। बड़े नारियल की भरत गेरू से तथा छोटे नारियल की खड़ी से की जाती है। रंग प्रायः गेरू और सफेद खड़िया ही होते हैं किन्तु कहीं कहीं गेरू के स्थान पर छाल हिंगुल का प्रयोग भी देखा गया है। इसी प्रकार खड़ी के स्थान पर सफेद फींक का प्रयोग भी किया जाता है। लाल हिंगुल और सफेद फींक का उपयोग उच्च कहलाने वाले वर्गों के माण्डनों में देखा गया है।

होली का चौक या होली का कापड़ा का चौक - यह चौक गोलाकार की सहायता से बनाया जाता है। इसमें दो समान त्रिभुज विभिन्न दिशा में बनाकर एक-दूसरे की सहायता से इसका आकार सितारे के समान बन जाता है। सितारे के मध्यभाग में आठ पंखुड़ियों का फूल भी बना दिया जाता है। सितारेनुमा इस आकृति के छः कलशनुमा आकार को आड़ी रेखाओं के मध्य कलशनुमा सुरे व बिन्दुओं से भरत भर दिया जाता है। मध्य में फूल को भी भरत से उभारते हैं या रेखाओं से भी उभारते हैं। इस माण्डने को बनाने का पर्व शिथिल से ही बोध हो जाता है।

इस माण्डने के लिये प्रमुख रंग गेरू या लाल रंग होता है। इसमें लाल और सफेद रंग को अलग-अलग भाग में भी भरा जाता है। सितारों के छः भाग (कलश) में सफेद खड़ी से भरत की जाती है। अन्दर के भाग में बना 8 पंखुड़ी के फूलों को सफेद व लाल रंग की भरत से बनाया जाता है या रेखाओं से उभारा जाता है। माण्डने के सभी छः कलश के सिरों पर तीन मूंदड़ी बनाकर इसकी सुन्दरता को निखारा जाता है। इस आकृति को प्रायः कच्चे मकानों में, शहर अथवा ग्राम के अंचलों में बनते देखा गया है।

मांडने का आधुनिक स्वरूप - मांडने की बनावट प्रायः प्राचीन परम्परानुसार ही बनाई जाती है। किन्तु प्रयोग के आधुनिक वातावरण में मांडने उससे वंचित नहीं हो सके। ये कच्ची लीपी-पुती जमीन से पक्के फर्श की शोभा बढ़ाने लगे। ग्रामीण अंचलों में आज भी मांडने अपनी परम्परानुसार बनाये जाते है। किन्तु शहरी अंचलों में इसमें उपयोग में आने वाले रंग, खड़ी, गेरू और चावल का स्थान विभिन्न जल एवं तेल रंगों ने ले लिया है।

शहरों ने ग्रामीण मान्यतानुसार वार-त्यौहार पर मांडने बनाये जाते ही है। किन्तु फैशन के आधार पर भी मांडने बनाये जा रहे हैं। मांडने बनाने के आकार प्राचीन मान्यतानुसार बनाये जाते हैं, किन्तु उसके प्रस्तुतिकरण में अन्तर आया है। यह अन्तर अनगढ़ हाथों और शास्त्रीय आधारों पर बनी आकृति में दृष्टिगत होता है।

संदर्भ

[1] सम्मेलन पत्रिका, श्री श्याम परमार, पृष्ठ-401 ।
[2] संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर - रामचन्द्र वर्मा - नागरी प्रचारिणी सभा गष्ठ सं. 2014 वि. पृष्ठ 276।
[3] भार्गव डिक्शनरी एंग्लो - हिन्दी पृष्ठ 627 ।
[4] अहीरखेड़ी देपालपुर गांव में देवयानी के साक्षात्कार के आधार पर।
[5] ग्राम बंडा उज्जैन में रासो के साक्षात्कार के आधार पर।